



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shrimad Bhagavad Gita Chapter-2 Shalok-38 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय दो-श्लोक अड़तीस | PDF

अध्याय 2 – सांख्य योग

श्लोक 38

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥ 38 ॥

सरल हिंदी में भावार्थ

हे अर्जुन!

सुख और दुःख, लाभ और हानि, तथा जीत और हार—इन सबको समान समझकर अपने कर्तव्य (युद्ध) में लग जाओ। इस प्रकार समभाव से कर्म करने पर तुम पाप के बंधन में नहीं पड़ोगे।

विस्तृत व्याख्या

इस श्लोक में श्रीकृष्ण अर्जुन को समत्व (equanimity) का महत्व समझाते हैं। वे बताते हैं कि कर्म करते समय मन को परिणामों से प्रभावित नहीं होने देना चाहिए।



1. समभाव (समान दृष्टि) का महत्व

कृष्ण कहते हैं कि जीवन में सुख-दुःख, लाभ-हानि और जय-पराजय आते-जाते रहते हैं।

यदि मनुष्य इनसे प्रभावित होकर निर्णय लेता है, तो वह अपने कर्तव्य से विचलित हो जाता है।

इसलिए सच्चा कर्मयोगी हर परिस्थिति में संतुलित मन बनाए रखता है।

2. परिणाम से मुक्त होकर कर्म

जब व्यक्ति परिणाम (जीत-हार, लाभ-हानि) की चिंता छोड़ देता है, तब उसका कर्म शुद्ध हो जाता है।

ऐसा कर्म निष्काम कर्म कहलाता है—जिसमें फल की इच्छा नहीं होती, केवल कर्तव्य होता है।

3. पाप से मुक्ति का मार्ग

कृष्ण बताते हैं कि जब कर्म स्वार्थ, मोह या भय से किया जाता है, तब वह बंधन और पाप का कारण बनता है।

लेकिन जब वही कर्म समभाव और निष्काम भाव से किया जाता है, तो वह पाप से मुक्त कर देता है।

4. मानसिक स्थिरता ही योग है

यह श्लोक सिखाता है कि योग केवल ध्यान या साधना नहीं, बल्कि जीवन के हर कार्य में संतुलित और स्थिर रहना है। समत्व ही सच्चा योग है।

मुख्य बिंदु

- समत्व का सिद्धांत – सुख-दुःख और लाभ-हानि में समान रहना ही योग है।



- निष्काम कर्म – परिणाम की चिंता छोड़कर कर्तव्य करना श्रेष्ठ है।
- पाप से बचाव – समभाव से किया गया कर्म बंधन नहीं बनाता।
- मानसिक संतुलन – जीवन में शांति और स्थिरता का आधार है।

गूढ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक सिखाता है कि जीवन के द्वंद्व (dualities) ही मनुष्य को बाँधते हैं।

जब व्यक्ति इन द्वंद्वों से ऊपर उठ जाता है, तब वह आत्मिक स्वतंत्रता का अनुभव करता है।

सुख में आसक्ति और दुःख में विरोध—दोनों ही मन को अशांत करते हैं।

लेकिन जो व्यक्ति हर स्थिति को समान भाव से स्वीकार करता है, वह भीतर से मजबूत और शांत बन जाता है।

पदों का भावार्थ

- सुख-दुःखे – खुशी और दुख
- समे कृत्वा – समान मानकर
- लाभ-अलाभौ – लाभ और हानि
- जय-अजयौ – जीत और हार



- युज्यस्व – लग जाओ / संलग्न हो जाओ
- न एवम् – इस प्रकार
- पापम् अवाप्स्यसि – पाप को प्राप्त नहीं करोगे

श्लोक का संदेश

जीवन में सफलता का रहस्य समभाव और निष्काम कर्म में है।

जो व्यक्ति हर परिस्थिति में संतुलित रहकर अपने कर्तव्य का पालन करता है, वही सच्चा योगी है और वही कर्म के बंधनों से मुक्त रहता है।

RELATED ARTICLE



Chapter–2 Shalok–36



Chapter–2 Shalok–37



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

